महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा एवं महादेवी वर्मा सृजन पीठ कुमाऊँ विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित 'भीष्म साहनी का रचना संसार' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (14-15 सितंबर, 2016) की रिपोर्ट-

हिंदी दिवस के अवसर पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा एवं महादेवी वर्मा सृजन पीठ कुमाऊँ विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित 'भीष्म साहनी का रचना संसार' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र बहुत ही सारगर्भित रहा। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन एवं दोनों विश्वविद्यालयों के कुलगीत से हुई। इस मौके पर कुमाऊँ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एच. एस. धामी के साथ-साथ हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा की अकादमिक संयोजक डॉ. शोभा पालीवाल, प्रो. देव सिंह पोखरिया, प्रो. दिवा भट्ट, प्रो. सूरज पालीवाल, डॉ. ब्रजेन्द्र त्रिपाठी, प्रो. हरि सुमन बिष्ट, डॉ. अवधेश शुक्ल आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम की अगली कड़ी में स्वागत वक्तव्य प्रो. देव सिंह पोखरिया ने दिया। डॉ. शोभा पालीवाल ने भीष्म साहनी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बहाने उनकी महत्ता एवं प्रासंगिकता पर अपनी बात रखते हुए संगोष्ठी की रूपरेखा पर विस्तृत प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. हेतु भारद्वाज ने भीष्म साहनी की रचनाशीलता पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि भीष्म साहनी सच्चे अर्थों में अपने समय के एक सजग एवं सचेत रचनाकार हैं हमें उनके समय एवं समाज को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में समझने एवं पुनर्मूल्यांकन करने की जरूरत है। डॉ. भारद्वाज ने कहा कि भीष्म साहनी की सारी रचनाएँ सूत्र रूप में हैं, वह मनुष्यता की क्षति के एहसास को व्यक्त करने वाले रचनाकर हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल की हिंदी-विभागाध्यक्ष प्रो. नीरजा टंडन ने कहा कि भीष्म जी ने भारतीय जनमानस की मनःस्थितियों एवं तत्कालीन समाज की विभीषिका को बहुत ही बारीकी से समझा है। भीष्म साहनी की रचनाशीलता पर विस्तार चर्चा करते हुए प्रो. टंडन ने बदलते सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश में भीष्म साहनी की रचनाओं की प्रासंगिकता पर बहुत ही गंभीरता से बातचीत की। इस सत्र की रिपोर्टिंग श्री प्रदीप त्रिपाठी एवं संचालन डॉ. मोहन रावत ने किया।

संगोष्ठी का पहला सत्र 'भीष्म साहनी उपन्यास साहित्य : सृजन और संदर्भ' विषय पर केन्द्रित था। इस सत्र में भीष्म साहनी के सभी उपन्यासों पर अलग-अलग दृष्टिकोण और संदर्भों के साथ गहन विचार-विमर्श हुआ। स्त्री चरित्रों की खूबियों से लेकर कमजोरियों पर और सांप्रदायिकता जैसी समस्या पर विभिन्न संदर्भों के साथ बात की गई। सत्र का संचालन दिवा भट्ट ने किया और अध्यक्षता हरिसुमन बिष्ट ने

की साथ ही शिक्षक तथा शोधार्थियों ने शोध पत्रों का वाचन किया। महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग की एसोशिएट प्रोफेसर प्रीति सागर ने 'भीष्म साहनी के उपन्यासों में स्त्री संदर्भ' विषय पर अपनी बात रखते हुए 'कड़ियाँ', 'कुंतो', 'नीलू नीलिमा नीलोफ़र' उपन्यासों के स्त्री-चरित्रों के माध्यम से अपनी बात रखी। डॉ. प्रीति सागर का मानना था कि 'भीष्म साहनी के स्त्री पात्र बहुत सशक्त नहीं हैं, उनके पात्र विद्रोह नहीं करते बल्कि परंपरा से अपने को टिकाए हुए यथास्थितिवादी हैं। इसी कड़ी में डॉ रामानुज अस्थाना जी ने भीष्म साहनी के उपन्यास 'बसंती' के माध्यम से मजदूर वर्ग की महिलाओं की पीड़ा और उनके जीवन के यथार्थ को आज के शहरी जीवन के साथ जोड़ते हुए विश्लेषित किया साथ ही डॉ. अस्थाना जी ने स्त्री को वस्तु या कोमोडिटी समझने वाली मानसिकता के खिलाफ लड़ने पर ज़ोर दिया। डॉ. तेजपाल ने भीष्म साहनी के उपन्यास 'मय्यादास की माड़ी' के स्त्री पात्रों के माध्यम से आधुनिक स्त्री विमर्श की विभिन्न परतों को टटोला। उनका मानना था कि भीष्म साहनी के स्त्री पात्र यथास्थिति के खिलाफ विद्रोह करने वाले हैं। 'मय्यादास की माड़ी' उपन्यास की पात्र रुक्मणी कहीं भी समझौता नहीं करती है बल्कि हमेशा यथास्थिति के खिलाफ विद्रोह करती नज़र आती है।

डॉ माया गोला ने तमस उपन्यास के बहाने सांप्रदायिकता के स्वरूप विषय पर बात रखी। इस विषय पर बात करते हुए उन्होंने आज के संदर्भों में सांप्रदायिकता के विविध स्वरूपों को मुख्यत: रेखांकित किया साथ ही धर्म और राजनीति के गठजोड़ से पोषित सांप्रदायिकता को समाज के लिए सबसे ज्यादा खतरनाक बताया। भीष्म साहनी हमेशा इस खतरनाक सांप्रदायिक मानसिकता के खिलाफ लड़ते रहे। नीलम पाण्डेय ने भीष्म साहनी के उपन्यासों की विशेषताओं को रेखांकित करते हुए कहा कि भीष्म साहनी की औपन्यासिक परंपरा यशपाल और प्रेमचंद से जुड़ती है। साहनी मानवीय सरोकारों को बचाने की लड़ाई भी अपने उपन्यासों में लड़ते हैं। कुमाऊँ विश्वविद्यालय की शोध छात्रा ममता ने भीष्म साहनी के उपन्यासों में व्यक्त राजनैतिक और सामाजिक संदर्भों पर अपनी बात रखी। महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के शोधार्थी आशुतोष शुक्ल और मेघा ने क्रमश: बसंती निम्नवर्गीय स्त्री प्रसंग तथा सांप्रदायिकता और भीष्म साहनी का तमस विषयों पर अपनी बात को केन्द्रित किया।

इस सत्र की अध्यक्षता कर रहे हरिसुमन बिष्ट ने भीष्म साहनी के औपन्यासिक फलक पर सूत्र रूप में अपनी बात कही। उनका मानना था कि भीष्म साहनी का सम्पूर्ण साहित्य मानवीय संदर्भों और

संवेदनाओं से भरा है लेकिन इसके बावजूद उनका साहित्य जितना सरल दिखता है उतना है नहीं। उनकी सरलता में ही जटिलता है। भीष्म साहनी अपने समय के सजक लेखक थे और यदि वह आज होते तो वर्तमान परिस्थितियों पर खूब लिखते। भीष्म साहनी और उनका लेखन कहीं समाज से पृथक नहीं दिखाई देता है । साथ ही हरीसुमन बिष्ट ने भीष्म साहनी के साथ उनकी मुलाकातोंका जिक्र भी किया। इस सत्र की रिपोर्टिंग प्रकाश चंद्र ने की।

भीष्म साहनी का रचना संसार विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का दूसरा सत्र 'भीष्म साहनी का कहानी साहित्य : सृजन और संदर्भ' विषय पर केंद्रित रहा। सत्र के प्रारंभ में मन्नू नौटियाल ने समसामयिक संदर्भों में भीष्म साहनी की कहानियों की प्रासंगिकता विषय पर विधिवत बातचीत की। उन्होंने कहाकि भीष्म साहनी अपने समय के सजग एवं सचेत रचनाकार हैं, उनकी कहानियाँ सूत्र रूप में हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इन्हें नए सिरे से देखने एवं समझने की जरूरत है। इसी क्रम में अगले वक्ता के रूप में अनिल कार्की ने विभाजन एवं सांप्रदायिकता के आलोक में भीष्म साहनी की प्रतिनिधि कहानियों की चर्चा की। कहानियाँ किस प्रकार से जनतंत्र पर अंकुश लगाती हैं पर बातचीत करते हुए कार्की ने मौजूदा कहानी-लेखन की प्रक्रिया एवं स्वरूप पर विधिवत प्रकाश डाला। अगले वक्ता के रूप में विवेकानन्द पाठक ने यथार्थवादी कथाशिल्पी भीष्म साहनी विषय पर अपनी बात रखी। चर्चा के क्रम में प्रकाशचन्द्र ने भीष्म साहनी की कहानियों पर फोकस करते हुए भविष्य के भारत के बदलते राजनैतिक परिदृश्य पर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। अपनी बातचीत के क्रम में उन्होंने कहानियों में चित्रित पात्रों के सहारे उनकी विसंगतिबोध पर भी चर्चा की।

इसी कड़ी में डॉ. आशा बिष्ट ने 'बदलते सामाजिक आर्थिक परिवेश एवं चीफ की दावत' एवं डॉ. संतोष कुमार ने 'युगबोध एवं युगीनबोध के शिल्पकार भीष्म साहनी' विषय पर अपनी बात रखी। अगले प्रतिभागी के रूप में उर्वशी ने भीष्म साहनी की कहानी 'प्रोफेसर', 'चीफ की दावत' एवं 'मिड इन इटली' कहानी के आलोक में भीष्म साहनी की कहानियों में बाजार एवं टूटते मानव मूल्य पर चर्चा की। 'अमृतसर आ गया है', जहूरबख्श एवं पाली कहानी को आधार बनाकर शिवदत्त ने वर्तमान सांप्रदायिकता के दौर में भीष्म साहनी की कहानियों की प्रासंगिकता पर बातचीत करते हुए कई मौजू सवाल उठाए। इसी क्रम में भावना मासीवाल ने 'खिलौना' एवं 'पाली' जैसी महत्त्वपूर्ण कहानियों को केंद्र में रखते हुए 'भीष्म साहनी की कहानियों में चित्रित बालचरित्र' एवं कंचन कुमारी ने 'नई कहानी आंदोलन एवं भीष्म साहनी' विषय पर विधिवत चर्चा की।

सत्र में अगले वक्ता के रूप में डॉ. बीर पाल सिंह यादव ने भीष्म साहनी की कहानियों की प्रासंगिकता पर अपनी बात रखते हुए भाषा, जाति एवं जेंडर से जुड़े कई महत्वपूर्ण सवाल उठाए। चर्चा के क्रम में डॉ. अवधेश शुक्ल ने 'भीष्म साहनी का कहानी साहित्य : सृजन एवं संदर्भ' विषय पर बातचीत करते हुए प्रेमचंद का निबंध'साहित्य का उद्देश्य' के आलोक में कहानियों की महत्ता एवं प्रासंगिकता पर खास बातचीत की। अगले प्रतिभागी के रूप में आरती स्मित ने भीष्म साहनी की कहानी में युगबोध एवं शिवदत्त पाण्डेय ने भीष्म साहनी की वैचारिक प्रतिबद्धता विषय की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही डॉ. दिवा भट्ट ने कहा कि भीष्म साहनी की रचनाएँ अनुभवजन्य संवेदना पर आधारित है। उनमें निराशा हताशा एवं कुंठा का द्वंद्व है। भीष्म साहनी ने व्यक्ति और समाज के मनोविज्ञान को बड़े ही बारीकी से समझा है। आज ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में उनकी रचनाओं का पुनर्मूल्यांकन करने की आवश्यकताहै।

संगोष्ठी के पहले दिन कुमाऊँ विश्वविद्यालय से जुड़े रंगकर्मियों द्वारा भीष्म साहनी की कहानी चीफ की दावत एवं महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कलाकारों द्वारा भीष्म साहनी का नाटक हानूश का नाट्य मंचन किया जिसका निर्देशन हिंदी विश्वविद्यालय के प्रदर्शनकारी एवं कला विभाग के सहायक प्रो. सतीश पावड़े ने किया।

संगोष्ठी का तीसरा सत्र 'भीष्म साहनी का नाट्य-साहित्य: सृजन एवं संदर्भ' विषय पर केंद्रित रहा। इस सत्र में शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों द्वारा कई महत्त्वपूर्ण विषयों पर शोध-पत्र पढ़े गए। हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा की शोध-छात्रा ज्योति, गजेन्द्र एवं मनीष कुमार ने कबिरा खड़ा बाजार में, माधवी एवं हानूश नाटक के आलोक में भीष्म साहनी के नाट्य-चिंतन एवं समसामयिक प्रसंगों पर कई महत्त्वपूर्ण एवं अनछुए पहलुओं की चर्चा की। सत्र की मुख्य वक्ता प्रो. नीरजा टंडन ने सत्ता एवं आम आदमी के संघर्ष पर बातचीत करते हुए भीष्म साहनी के नाटकों के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य एवं प्रासंगिकता पर विशेष चर्चा की। सत्र के अगले वक्ता डॉ. अमरेन्द्र शर्मा ने भीष्म साहनी के नाटकों का स्त्रीवादी पाठ विषय पर बातचीत करते हुए उनके पुनर्पाठ की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। उन्होंने बताया कि भीष्म साहनी के लिए नाटक कोई प्राथमिक क्रिया नहीं बल्कि द्वितीयक क्रिया है, इन बारीकियों को हमें समझने की जरूरत है।

इसी सत्र में डॉ. कमलेश कुमार मिश्र ने भीष्म साहनी की अभिनय यात्रा से गुजरते हुए उनकी वैचारिक प्रतिबद्धता एवं सृजनात्मकता पर विशेष चर्चा की। सत्र की अध्यक्षता कर रहे ब्रजेन्द्र त्रिपाठी ने भीष्म साहनी से जुड़े संस्मरणों के बहाने उनकी कहानियों, उपन्यासों नाटकों एवं सिने-यात्रा संबंधित कई

महत्त्वपूर्ण एवं चर्चित पहलुओं की तरफ लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। इस सत्र का संचालन हिंदी विषविद्यालय की अकादमिक संयोजक डॉ. शोभा पालीवाल एवं रिपोर्टिंग हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के शोध-छात्र प्रदीप त्रिपाठी ने की।

इसी कड़ी में संगोष्ठी का चतुर्थ (समापन सत्र) बहुत ही सारगर्भित रहा। इस सत्र में भीष्म साहनी के अन्य गद्य विधाओं पर विस्तार से चर्चा हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. जगत सिंह के साथ मंच का संचालन हिंदी विश्वविद्यालय की अकादमिक संयोजक डॉ. शोभा पालीवाल ने किया। मंच पर प्रो. जगत सिंह के साथ साहित्य के प्रख्यात आलोचक प्रो. सूरज पालीवाल व हिंदी विश्वविद्यालय की सहायक प्रोफेसर डॉ. सुप्रिया पाठक, डॉ. निशा आर्या, प्रो. देव सिंह पोखरिया भी उपस्थित थे।

सत्र का संचालन करते हुए डॉ. शोभा पालीवाल ने भीष्म साहनी की रचना प्रक्रिया के संवेदनात्मक पक्ष पर बातचीत करते हुए कहा कि संवेदना ही किसी रचना का मर्म है। डॉ. सुप्रिया पाठक ने भीष्म साहनी की स्त्रीवादी दृष्टि को उभारते हुए कहा कि भीष्म साहनी अपनी लेखकीय संवेदना के साथ स्त्री चरित्र के सशक्त रूप को समाज के समक्ष रखते हैं। इस पर हमें नए दृष्टि से सोचने एवं समझने की जरूरत है। सत्र में भीष्म साहनी के बाल मन की संवेदनाओं को लेकर उनके व्यक्तित्व पक्ष पर भी चर्चा हुई। सत्र के मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. सूरज पालीवाल ने भीष्म साहनी को ईमानदार रचनाकार कहते हुए कहा कि रचनाकार अपनी तरफ से चीजों को विकसित करता है उसके पीछे उसका कोई न कोई खास मकसद होता है। इस संदर्भ में उन्होंने तमस जैसे उपन्यास की मिसाल देते हुए बताया कि तमस का अँधेरा कोई सामान्य अँधेरा नहीं बल्कि मानसिक अँधेरा है। लेखक अपनी रचना द्वारा पाठकों को विश्वास दिलाने की कोशिश करता है कि चीजें बदलेंगी। इसी क्रम में सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. जगत सिंह ने भीष्म साहनी के अन्य गद्य विधाओं के साथ ही कथा साहित्य पर चर्चा करते हुए सूत्र रूप में कहा कि भीष्म साहनी की सभी रचनाएँ अपने आस-पास के जीवन से जुड़ी हैं जिसमें मुख्यतः प्रो. सिंह ने भीष्म साहनी के वस्तु चयन की विशेषता पर एवं कथा साहित्य में नारी चरित्र पर खास चर्चा की। उन्होंने कहा कि वैविध्यता भीष्म साहनी के कथा रचना का कौशल है। अंत में महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के शोधार्थियों प्रदीप त्रिपाठी, संजय एवं आदित्य की प्रस्तुति को सराहा साथ ही शोधार्थियों द्वारा भीष्म साहनी के संवेदना और यथार्थ पक्ष, इप्टा से जुड़े भीष्म साहनी का हिंदी सिनेमा में योगदान, सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं में भीष्म साहनी आदि विषयों पर हुई सारगर्भित चर्चा की प्रशंसा की।

अंत में समापन सत्र का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए प्रो. देव सिंह पोखरिया महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय और कुमाऊँ विश्वविद्यालय एवं अन्य सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। प्रो. पोखरिया ने कहा कि रचना ही रचनाकार की पहचान होती है। भीष्म साहनी की रचनाएँ स्वयं बोलती हैं जो पाठकों की समीक्षा दृष्टि को विकसित करती है, जहाँ लेखक को समग्रता में समझना आवश्यक होता है। अंत में उन्होंने प्रो. हेतु भारद्वाज के दिशा-दर्शक वक्तव की सराहना की एवं डॉ. शोभा पालीवाल के द्वारा कार्यक्रम आयोजन में योगदान एवं कुमाऊँ विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग, साथ ही कार्यक्रम में भाग लेने वाले शोधार्थियों, प्रदर्शनकारी कलाकारों एवं अन्य सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि समग्र संगोष्ठी की सफलता सहभागियों द्वारा कार्यक्रम से ले जाने वाले तथ्य पर निर्भर करता है। इस सत्र की रिपोर्टिंग कंचन कुमारी ने की। कार्यक्रम में हिंदी विश्वविद्यालय की एसोशिएट प्रो. प्रीति सागर, डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. बीरपाल सिंह यादव, डॉ. सुप्रिया पाठक, डॉ. अमरेन्द्र शर्मा, डॉ. सतीश पावड़े के अलावा अतिथि वक्ता के तौर पर डॉ. आरती स्मित, डॉ. सुजाता, डॉ. कृष्णगोपाल, डॉ. नीलम पाण्डेय, डॉ. शंभूदत्त पाण्डेय 'शैलेय', डॉ. मन्नू ढोंढियाल, डॉ. संतोष कुमार, डॉ. आशा विष्ट के साथ-साथ बड़ी संख्या में शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।